www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853114
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 12 रोहतक, 21 अगस्त, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

संदर्भ : बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय-5, ब्राह्मण-2

प्रजापति का अपनी प्रजाओं के प्रति 'द' उपदेश

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद के ही शब्दों में **'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः'** (यजु० 26/2) यह ईश्वर की कल्याणी वाणी है जिसका उपदेश परमपिता परमेश्वर ने बिना किसी भेदभाव के मनुजमात्र के हित, कल्याण सुख, शान्ति एवं आनन्द के लिये किया है। यह **'अभ्युदय'** और **'निःश्रेयस्'** दोनों की शुद्धि हमें करवाती है। वेद चूँकि मन्त्र रूप में प्रकाशित हुये थे अतः उनकी व्याख्या, मन्त्रों का अर्थ, अर्थ का विस्तार आदि बाद के समय में होता गया। आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद्, सूत्रादि ग्रन्थों में वेदार्थ के रहस्यों को सरल बनाकर समझाया गया। ऐसा करते समय ऋषियों ने कथा, कहानी, आख्यान, उपाख्यान, प्रश्नोत्तर, संवाद आदि-आदि का आवश्यकतानुसार भरपूर उपयोग किया। वेदों ने **'मनुर्भव, जनया दैव्यं जनम्'** (ऋ० 10/53/6) कहकर मनुष्य बनने पर और दिव्य (दैवी गुणों से युक्त) संतान उत्पन्न करने पर जोर दिया, **'मा गृद्ध कस्य स्विद्धनम्'** (यजु० 40/1) कहकर राक्षसी (आसुरी) दुष्प्रवृत्तियों को दूर भगाने, उनसे बचे रहने का सदुपदेश दिया और इसी प्रकार **'उलूक यातुं शुशुलूक यातुं जहिश्व यातुम्'** (ऋ० 7/104/22) के माध्यम से पशु-सुलभ दुर्गुणों को पास तक न फटकने देने की शिक्षा दी। उपर्युक्त सुप्रवृत्ति, प्रवृत्ति एवं दुष्प्रवृत्ति ही क्रमशः हमें देव, मनुष्य या फिर असुर/राक्षस बनाती है। मनुष्य का उत्थान और पतन उसमें पनपने वाली प्रवृत्ति या दुष्प्रवृत्ति का ही तो परिणाम है, उसके मन में पाये जाने वाले 'शिव' या 'अशिव' संकल्प की ही स्वाभाविक परिणति हैं (द्रष्टव्य-यजु० 34/1-6 शिवसंकल्प वाले मन्त्र)।

इसी सन्दर्भ में बृहदारण्यकोपनिषद् के अन्तर्गत अध्याय-5 ब्राह्मण-2 (कण्डिका 1-3) में आये प्रजापति के 'द' उपदेश का अनन्य साधारण महत्त्व है। प्रजापति ने उक्त 'द' उपदेश अपनी दैवी, मानुषी और आसुरी/राक्षसी प्रजा को दिया है जिसकी प्रासंगिकता, उपादेयता सदाबहार तो है ही, साथ ही सार्वकालिक और सार्वभौमिक भी है। वेद की इन्हीं विशेषताओं के चलते पौर्वात्य एवं पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक-विचारधारा, वैदिक मान्यताओं और वैदिक दर्शन को 'द फिलोसोफिया पिरैनिस' (Philosophia prvennis) अर्थात् शाश्वत, सनातन, सत्य (ऋत) एवं नित्य कहा है। कुछ मंदबुद्धि, दुराग्रही तथाकथित संत एवं स्वयम्भू, स्वघोषित विद्वान् (वास्तव में अविद्वान्) वेद के विषय में अनर्गल एवं मिथ्या दुष्प्रचार करते रहते हैं, जो कि पूरी तरह निराधार, बेतुका, अप्रामाणिक एवं निरर्थक प्रलाप मात्र है, अन्य कुछ भी नहीं है।

प्रो० ओमकुमार आर्य

आइये, प्रजापति के 'द' उपदेश की ओर लौटें। उपनिषद् कहती है कि एक बार देव, मनुष्य और दानव/असुर तीनों मिलकर प्रजापति के पास गये और प्रार्थना की कि उन्हें उपदिष्ट करें। प्रजापति ने कहा कि कुछ समय तप करो, फिर आना हम तुम्हें उपदेश देंगे। सो तप करने के पश्चात् सबसे पहले देव प्रजापति की शरण में गये और कहा कि हमें उपदेश देवें **'देवाः ऊचुः नः ब्रवीतु'** (देव बोले, भगवन् हमें उपदेश देवें)।

प्रजापति ने कहा 'द इति' और पूछा समझ गये, हमने क्या उपदेश दिया है। देवों ने उत्तर दिया—हाँ, हमें आत्मानुशासन, संयम, दमन के द्वारा सदैव दुष्ट प्रवृत्तियों पर काबू रखना चाहिये ताकि हमारा 'देवत्व' बरकरार रहे।

फिर मनुष्य गये, प्रार्थना की, भगवन् उपदेश दीजिये। प्रजापति ने उसी 'दकार' को दोहराया कि 'द' और पूछा, समझ गये, हमने क्या कहा? मनुष्य बोले, हाँ महाराज समझ गये—द-दत्तेति, अर्थात् दान करो। दान भावना के अभाव में मनुष्य समाज न एक क्षण टिक पायेगा न चल पायेगा, चारों ओर अव्यवस्था फैल जायेगी।

तदनन्तर असुर/दानव प्रजापति के पास गये और उपदेश देने की प्रार्थना की। उपनिषद् के शब्दों में **'अथ हैनमसुरा ऊचुर्ब्रवीतु नो भवानिति'** अर्थात् हमें भी उपदेश देवें। प्रजापति ने फिर अपना वही उपदेश द-कार दोहराया—'द' और पूछा कि समझ गये, हमने क्या कहा? असुर बोले हाँ, भगवन् हम समझ गये द—दयध्वमेति=दया करो, रहम करो, हृदय में अन्यों के प्रति करुणा का भाव जगाओ। जो मिला उसी को नोच खाया, मार दिया, उदरस्थ कर लिया। त्यागो इस दुष्ट प्रवृत्ति को, यही है तुम्हारे लिए उपदेश, इसी में है तुम्हारा कल्याण।

अब देखिये दैवी वाक्=उपदेश एक ही है—द, द, द, दैवी प्रजा भी एक है, प्रवृत्ति भेद से वही 'देव' है वही 'मनुष्य' है वही 'असुर' है। इसलिये अपने-अपने हित के लिये रुचि वैचित्र्य के अनुसार अर्थ में भेद कर लिया गया। क्योंकि उपदेश लेने वाले जानते थे कि यही अलग-अलग अभिप्राय उनके लिये हैं। अर्थात् देवसृष्टि के लिये द= दाम्यत= आत्मानुशासन, इन्द्रिय-दमन।

मनुष्य सृष्टि के लिये द=दत्त, दान भावना बनाये रखो।

असुरों के लिए द=दयध्वम्=दयाभाव, करुणा, मन में रखो ताकि असुरत्व से मुक्त हो सको, मनुष्यत्व और देवत्व की ओर अग्रसर हो सको। प्रजापति के इस 'द' उपदेश की जितनी प्रासंगिकता, उपादेयता, आवश्यकता आज है उतनी अतीत में संभवतः पहले कभी नहीं रही होगी।

आज जो बुद्धिजीवी वर्ग, समाज के मुखिया, देशों के कर्णधार, जिन्हें 'देवकोटि' में होना चाहिये था वे सब भयंकर भ्रष्टाचार, अनाचार, घपले, घोटालों में न केवल संलिप्त हैं, बल्कि इन सब बुराइयों के जनक, संरक्षक एवं सम्पोषक बने हुए हैं, जिनके चलते आम आदमी का जीना दूभर हो गया है। जिन्हें एक आम आदमी की तरह एक सुखी, संतुष्ट, शांत जीवन जीना चाहिये था वे सभी मनुष्य भी अत्यधिक लोभ, लालच, संग्रह, परिग्रह आदि विकारों से ग्रस्त हैं, फलतः स्वयं भी त्रस्त हैं, अन्यों को भी त्रास दे रहे हैं। जिनकी मानसिकता, प्रवृत्तियाँ, जीवनशैली पहले से ही राक्षसी हैं, आसुरी हैं, खूंख्वार एवं हिंसक हैं वे भी अपने सुधार का कोई उपाय नहीं करना चाहते। इन सबको (देव, मनुष्य, असुर=स्वभाव एवं प्रवृत्ति की अपेक्षा से)

शेष पृष्ठ 7 पर....

मेरी उत्तराखण्ड की यात्रा

❑ कन्हैयालाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की अन्तरंग सभा ने 27.7.2013 को उत्तराखण्ड आपदा सहायता कोष की राशि का किस प्रकार वितरण किया जाये इस पर कई प्रकार के विचार प्रकट हुए आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री विनय आर्य जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। वहां किस प्रकार की सहायता सार्थक रहेगी इस पर श्री विनय आर्य जी ने अपने विचार प्रकट किये अन्तत: यह निर्णय हुआ कि वहां कोई नगर बसाया जायेगा। विद्यालय या गुरुकुल खोला जाये जिससे इस घोर पौराणिक क्षेत्र में आर्यसमाज की विचारधारा पाखण्ड खण्डनी के रूप धारण कर सके। यह भी निर्णय हुआ कि दो तीन दिन के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक छोटी-सी टीम उस क्षेत्र में वहां का सर्वेक्षण करेगी जिससे आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की ओर से प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य के अतिरिक्त एक और व्यक्ति सहयोग करेगा।

इस प्रकार 31.7.2013 बुधवार श्री सुभाष गुगलानी (पानीपत वाले) प्रात: 10 बजे यहां से आर्यसमाज शाहबाद मु.पुर नई दिल्ली के मन्त्री श्री मुकेश आर्य एवं प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री पदमचन्द आर्य के साथ उत्तराखण्ड क्षेत्र के लिए प्रस्थान किया। श्री विनय आर्य जी ने हमें आदेश दिया कि वहां आपके मोबाइल काम नहीं करेंगे इसलिए एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल से हमारे से उत्तराखण्ड का एक मोबाइल लेकर जायें, वहाँ हमें श्री राजीव आर्य महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा देहली एवं अशोक मैहतानी मन्त्री आर्यसमाज पंजाबी बाग, श्री विनय आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कुछ निर्देश एवं धनराशि देकर विदा किया। हम रात्रि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में कावड़ यात्रा के कारण 10 बजे पहुंचे वहां हमारा आतिथ्य गुरुकुल के उपमुख्य अधिष्ठाता श्री जयप्रकाश जी ने किया। श्री विनय आर्य जी के दिशा निर्देश अनुसार गुरुकुल में पहले से रखी हुई 18 पेटियां जिनमें 168 सोलर लैम्प वहां से टैम्पो ट्रेवलर पर तथा कुछ खाद्य सामग्री दिल्ली तथा गुड़गांव से कुछ शालें, नये कपड़े विशेष रूप से 150 नई ब्रांडिड कमीजें एवं कुछ महिलाओं के लिए नये सूट इत्यादि लेकर 1.8.2013 प्रात: 6 बजे गुप्त काशी के लिए प्रस्थान किया। वहाँ हमें प्रात:काल श्री जयप्रकाश आर्य जी एवं उनके साथियों ने विदा किया।

हमारी गाड़ी नरेन्द्र नगर, चम्बा, टिहरी, घन्साली, मयाली पहुँचकर जब आगे की यात्रा के लिए चल रहे थे तो जखोली पर पुलिस पोस्ट पर हमें यह कहकर रोक दिया गया कि आगे रास्ते टूटे हुए हैं, रास्तों में आपको काफी कठिनाई होगी साथ में आपदा सहायता समान देखते ही लोग झपट पड़ेंगे और आप लुट जाओगे पुलिस प्रशासन वहां तक आपकी सहायता नहीं कर सकेगा। अपने सहायता के बैनर एवं ध्वज हटाने का भी निर्देश दिया ताकि हमारी यात्रा सुरक्षित हो सके। पुलिस इन्सपेक्टर बी.एस. राणा की बातें हमें कुछ-कुछ गलत लगी परन्तु पुलिस प्रशासन के आदेशों की हम अवहेलना न कर सके और विवश होकर वह रात्रि गढ़वाल विकास निगम के गेस्ट हाउस में व्यतीत करनी पड़ी। वहां के सुन्दर दृश्य एवं घाटियों की अनुपम छटा को देखकर मन मयूर नाच उठा परन्तु प्राकृतिक आपदा के स्मरण होते ही वह प्रसन्नता कुछ भी क्षणों में कहां लुप्त हो गई। यह हमें ध्यान ही नहीं रहा। पूरी रात्रि वर्षा होती रही परन्तु फिर भी हमें शीघ्र ही गन्तव्य स्थल पर पहुंचना था। अत: हम भारी वर्षा के मध्य हमने 2.8.2013 प्रात: 7 बजे गुप्तकाशी की यात्रा ही प्रारम्भ कर दी।

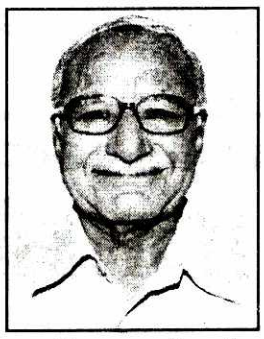

कन्हैयालाल जी आर्य

अभी हम 2-3 किलोमीटर ही चले थे हमने अनुभव किया कि पुलिस प्रशासन के निर्देश ठीक थे। यह मार्ग रात्रि की यात्रा का नहीं था। स्थान-स्थान पर Land Sliding कीचड़, सड़क मार्ग का संकरा होना पल-पल हमें मृत्यु का संदेश दे रहा था। हम एक अच्छे पवित्र कार्य के लिए जा रहे हैं; यह विचार कर आगे बढ़े। अभी 15 किलोमीटर ही चले थे कि पता चला कि Land Sliding हो गई है। हमें दो घण्टे रुकना पड़ा। मार्ग साफ होते ही हम आगे चले। देहली से भी विनय आर्य के बड़े भ्राता श्री बिजेन्द्र आर्य एवं आर्यसमाज रानी बाग के अधिकारी श्री रणधीर आर्य जी से दिशानिर्देश प्राप्त किया। उन्होंने हमें समझाया कि जहाँ भी कीचड़ देखें वहां गाड़ी से उतर जायें तथा किस प्रकार अपने सामान की चौकसी करनी है यह भी बताया। उन निर्देशों का पालन करते हुए हमने केवल 70 किलोमीटर यात्रा लगभग 9 घण्टे में पूर्ण की। अभी गुप्तकाशी केवल 7 किलोमीटर शेष थी। हम आन्द्रावाड़ी नामक स्थान पर पहुंचे ही थे कि वहां पता चला कि पिछले 24 घण्टे से मार्ग Land Sliding के कारण अवरुद्ध है एक सिलेण्डरों से भरा ट्रक खाई में जा पड़ा है लोग सिलेण्डरों को लूटने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं। ट्रक के मालिक ने आकर जे.सी.बी. पर कार्य कर रहे आदमी को थप्पड़ मार दिया। मार्ग सफाई का कार्य रुक गया परन्तु प्रशासन नाम की कोई चीज उस मार्ग पर नहीं मिली। अंतत: मार्ग रुका रहा।

3.8.2013 को प्रात: 8 बजे श्री बिजेन्द्र आर्य एवं श्री रणधीर आर्य जी जहाँ हम रुके हुए थे, वहाँ पहुँचे। इससे पूर्व हम आगे की यात्रा का वर्णन करें वहाँ आन्द्रावाड़ी के श्री मदनमोहन जी एवं उनकी पत्नी ने लगातार 40 घण्टे तक हमारी सेवा में कोई कसर नहीं रखी मानवता के नाते उन्होंने न केवल हमारे लिए भोजन, चाय, जल एवं रात्रि विश्राम की व्यवस्था की अपने बैडरूम तक हमारे लिए खोल दिये। हम से पूर्व दो बी.एस.एफ. ट्रकों के ड्राइवर वहां रह रहे थे। पांच व्यक्ति हम पहुंच गये। थोड़ी देर में एक आपदा सहायता सामान का ट्रक बम्बई से कुछ सामान लेका आया था वह भी 3-4 व्यक्ति वहां रहने लगे। अत: 12 से 15 व्यक्ति का व्यवस्था बिना जान-पहचान के करना उस परिवार की अतिथि सेवा को हम नमन करते हैं। श्री मदन मोहन जी एक साधारण से डाकघर में कार्य करने वाले एक कर्मचारी हैं, परन्तु उनके हृदय में इस प्रकार की आतिथ्य सेवा को हम नमन करते हैं।

श्री बिजेन्द्र आर्य जी एवं श्री रणधीर आर्य जी की वहां की व्यवस्था देखकर हमें लगा कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अपने कार्य को बड़े उत्तम रीति से करना जानते हैं। हमारे पहुंचने से पूर्व उन्होंने उस आपदा प्रभावित क्षेत्रों के दूर-दराज इलाके का सर्वेक्षण कर रखा था। बहुत ही दुर्गम स्थानों पर वह हमें ले गये जो यात्रा साधारण तौर पर एक घण्टे में हो सकती थी वही यात्रा हमें करने में लगभग 4 घण्टे लगे। पहाड़ियों की पगडण्डियों पर किसी प्रकार चढ़ते-चढ़ते हम हांफ रहे थे, परन्तु श्री माधव जी विकास खण्ड भाजपा के अध्यक्ष के सहयोग एवं निर्देशन से हम गांव सल्या, देवांगण, भिनौली, तुलुंगा घाट पार पहुंचे। सूचियां वहां के ग्राम प्रधान एवं सरपंचों की सहायता से पहिले से तैयार थी प्रत्येक घर का सर्वेक्षण पहले से किया जा चुका था। हमने वहां प्रत्येक

शेष पृष्ठ 8 पर....

आर्यों के तीर्थ
दयानन्दमठ, दीनानगर
जिला गुरदासपुर (पंजाब)
को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर
हीरक जयन्ती समारोह
18, 19, 20 अक्तूबर, 2013
को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।
निवेदक :- स्वामी सदानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति
सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

www.thearyasamaj.org

अकेले प्रभुभक्त का विजय

-: वेद-मन्त्र :-

युध एकः सं सृजनि यो अस्या एक इद्वशी।
तरांसि यज्ञा अभवन्तरसां चक्षुरभवद्वशा॥ (अथर्व० 10.10.24)

अर्थ—(यः) जो साधक (अस्याः) इस पारमेश्वरी शक्ति को (एक इद् वशी) अकेला, एकान्त में योगाभ्यास द्वारा वशी अर्थात् अपने वश में कर लेता है वह (एकः) अकेला ही (युधः) बुराइयों के विरुद्ध युद्ध, संघर्ष (संसृजति) छेड़ देता है। इस समय उसके (यज्ञाः) यज्ञादि उत्तम कर्म (तरांसि) जीवन-संग्राम में पार ले जाने वाले (तरांसि अभवन्) नौका या रथ आदि वाहन रूप हो जाते हैं और (वशा) पारमेश्वरी शक्ति उन (तरसाम्) योगी के सहयोगी यज्ञ रूप वाहनों का (चक्षुरभवत्) मार्गदर्शन करती है।

जीवन एक संग्राम है। जो यहाँ आकर उससे दो-दो हाथ करता है उसका विजय होता है। युद्धादि में सेना, आयुध और वाहन तथा अच्छे सारथियों की आवश्यकता होती है। यदि किसी में अकेले लड़ने का साहस नहीं है तो वह अपने से शक्तिशाली का दामन पकड़ लेता है।

जब किसी को अपना सहायक ही बनाना है तो फिर क्यों नहीं उसे ही ढूंढे जो सबसे शक्तिशाली हो। सब ओर दृष्टिपात करने पर सर्वशक्तिमान् एक ईश्वर ही दृष्टिगत होता है। उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने पर सचमुच ही वह रक्षक हो जाता है। **'यो अस्या एक इद् वशी'** जब वह कृष्ण की भांति अर्जुन का सारथि बन जाता है तब साधक **'एकः युधः सं सृजति'** अकेला ही अन्याय, अत्याचार, अज्ञानरूपी बाह्य शत्रु काम, क्रोधादि आभ्यन्तर शत्रुओं से मुकाबला करने लगता है। याद रखो जो ईश्वर से डरता है वह दूसरों से भयभीत नहीं होता और जो ईश्वर का भय न मानकर अधर्म का आचरण करता है उसे पग-पग पर भय का सामना करना पड़ता है। साधक के वश में हुआ जगन्नियामक प्रभु उसका सारथि बन उसे सर्वत्र विजयी बना देता है।

इस साधक का बल यज्ञादि उत्तम कर्म हैं। ये ही उसके आयुध और वाहन हैं जिनके दम पर वह आसुरी शक्तियों से अकेला ही लोहा लेने के लिये निकल पड़ता है। धीरे-धीरे उसके सहयोगी भी जमने लगते हैं और उसका कारवाँ बढ़ता ही चला जाता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि ऐश्वर्य के मद में वह अपने पथ-प्रदर्शक को भूल जाता है। परिणाम स्वरूप वह पुनः अवनति के गर्त्त में फँस जाता है। जिन यज्ञादि के आधार पर वह आगे बढ़ा था उनका परित्याग कर देने से वह स्वयं किसी एक पक्ष का समर्थक बन जनता की भीड़ में खो जाता है। वह यह भूल जाता है कि जिस सीढ़ी का सहारा लेकर वह इतनी ऊंचाई पर पहुंचा है उस सीढ़ी के खिसकने पर उसे धड़ाम से नीचे गिरना पड़ेगा, जिसमें उसके जीवन को भी खतरा है। इसलिये वेद ने कहा **'तरांसि यज्ञा अभवन्'** यज्ञादि उत्तम कर्म उसके बल अर्थात् सहायक हुए तथा 'तरांसि चक्षुरभवद् वशा' वह पारमेश्वरी शक्ति उन बलों या सहायक साधनों की मार्गदर्शिका बनी जिसके बतलाए मार्ग पर चलकर ऐसा साधक अन्धकार को भगा सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश करता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता जाता है।

सबसे बड़ा बल आत्मिक बल है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—"ईश्वर की भक्ति करने से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पहाड़ जैसी विपत्ति आने पर भी अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होगा।" जब ईश्वरभक्ति से इतना सामर्थ्य उत्पन्न होता है तो क्यों न 'बलमसि बलं मयि धेहि' का जाप किया जाए। **(साभार-वेद-स्वाध्याय) —आचार्य बलदेव**

बाल-संस्कार शिविर सम्पन्न

देव ऋषिकुल विद्यापीठ जुलाना (जीन्द) में 7-11 अगस्त को संस्कार शिविर लगाया गया। बाल-संस्कार शिविर के संचालक आचार्य वेदमित्र जी थे। आचार्य जी की बालसुलभ शैली से बालकों ने थोड़े काल में ही संस्कारी शिक्षाओं को कण्ठस्थ कर सभी कोआश्चर्य चकित कर दिया। गुरुकुल की छात्राएं ब्र० सुमेधा, ब्र० मधुलिका ने सस्वर मन्त्रपाठ व संगीत का जीवन्त शिक्षण दिया।

आचार्य जी ने यज्ञ पर अध्यापकों व छात्रों को प्रेरित किया तथा राष्ट्रनिर्माण हेतु अपने को दीक्षित व संस्कारवान् बनने का आह्वान किया। सभी को जनेऊ प्रदान किये गये। श्री सुरेन्द्र जी व पवन जी ने आचार्य जी का धन्यवाद किया। **संचालक : देवऋषि विद्यापीठ, नन्दगढ़ जुलाना (जीन्द)**

स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द में अन्तर

आर्यसमाज के अनेक सदस्यों को यह नहीं पता कि स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द में क्या अन्तर है? उनकी जानकारी के लिए दोनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—

स्वामी दयानन्द

जन्म-गुजरात के जिला राजकोट के ग्राम टंकारा में सन् 1824 ई० में हुआ। बचपन का नाम मूलशंकर था। पिता कर्षण जी बड़े जमींदार और शिव के पक्के भक्त व उपासक थे।

शिक्षा-स्वामी जी ने विभिन्न पुराण, प्रारम्भिक व्याकरण शब्द रूपावली आदि घर पर ही पढ़ लिए थे। 14 वर्ष की अवस्था तक उन्होंने यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ कर ली थी। गृहत्याग के पश्चात् विभिन्न विद्वानों और योगियों से विद्योपार्जन किया और मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से व्याकरण व वेदों का ज्ञान प्राप्त किया।

प्रचार-वेदों का प्रचार किया। त्रैतवाद को समझाया। मूर्तिपूजा अवतारवाद का खण्डन किया। शुद्ध शाकाहारी भोजन की प्रेरणा दी।

देहान्त-30 अक्टूबर 1883 ई० कार्तिक की अमावस्या को दीपावली के दिन अजमेर में प्राण त्यागे।

स्वामी विवेकानन्द

जन्म-12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता में हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र था। इनके पिता विश्वनाथ जी वकील थे।

शिक्षा-इन्होंने कालेज में बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

गुरु-इनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे, जो काली माई के उपासक थे। उनसे प्रभावित होकर अद्वैतवाद को स्वीकार किया।

प्रचार-इन्होंने मूर्तिपूजा का समर्थन किया और अद्वैतवाद का प्रचार किया और मांस खाने के लिए मना नहीं किया क्योंकि स्वयं मांस खाते थे।

देहान्त-4 जुलाई, 1902 ई० को रात को लगभग 9 बजे निधन हुआ।

—देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक को मात्र 12000/- रुपये प्रतिवर्ष का विज्ञापन देकर प्रकाशन में सहयोग कीजिए

जैसा कि आप जानते हैं कि **'आर्य प्रतिनिधि'** हिन्दी साप्ताहिक समाचार-पत्र है। वर्तमान में इसके लगभग 2700 सदस्य हैं और यह देश के सभी प्रान्तों में जाता है। लगभग ढाई लाख इसे प्रति सप्ताह पढ़ते हैं। **'आर्य प्रतिनिधि'** आर्यसमाज का हरयाणा में सर्वाधिक प्रचार संख्या वाला अपना एकमात्र अखबार है। इसमें प्रति सप्ताह आर्यसमाज की गतिविधियों के समाचार, विद्वानों के लेख, साहित्य समीक्षा, विविध-समाचार, स्वास्थ्य-चर्चा आदि प्रकाशित होते हैं। समाज से निवेदन है कि इस प्रमुख आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के समाचार-पत्र को प्रतिवर्ष 12000/- रुपये का सहयोग विज्ञापन के रूप में देकर सहयोग प्रदान करें। यह योजना वार्षिक विज्ञापन योजना है इसके अन्तर्गत 8 गुणा 9 सैं.मी. साइज का विज्ञापन प्रतिमाह एक अंक में यानी एक वर्ष में कुल 12 अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। विज्ञापन सहयोग राशि आपको अग्रिम भेजनी होगी। आपकी स्वीकृति आने पर विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। 12000/- रुपये की विज्ञापन सहयोग राशि को अपने व्यवसाय/प्रतिष्ठान/फर्म में विज्ञापन खर्च के रूप में दिखा सकते हैं। विज्ञापन आप ईमेल-**aryapsharyana@gmail.com** के पते पर अथवा डाक कोरियर स्पीड पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं तथा विज्ञापन राशि अग्रिम पंजाब नेशनल बैंक बाहरी किला रोड रोहतक में **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** के नाम से एकाउण्ट नं० **1953000100286216** में जमा कर सकते हैं या **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक'** के नाम से ड्राफ्ट द्वारा भी भेज सकते हैं।

सम्पर्क-विज्ञापन-विभाग

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक-124001 (हरयाणा)

फोन नं० 01262-216222, 8901387993, 9050194590

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से नियमानुसार सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

सेवा में,

माननीय श्री प्रधान/मन्त्री जी
सभा से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाज, हरयाणा

विषय : सभा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव)

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आगामी 3 वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमों के अनुसार और सभा के संविधान के अनुसार चुनकर, **प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनांक 31 अगस्त 2013 तक सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में अवश्य भेज देवें, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सकें।**

प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम

1. प्रत्येक आर्यसमाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के साथ कम से कम दो वर्ष से सम्बन्धित हों अर्थात् 31 जुलाई 2013 तक जिसके दो वर्ष पूरे हो चुके और प्राप्तव्य दशांश तथा वेदप्रचार के लिए प्रतिवर्ष कम से कम 1000/- रुपये अथवा अधिक देता हो, को अधिकार होगा कि वह अपने **प्रथम 21 आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा अगले प्रति 90 आर्य सभासदों** (जिनका नाम उस आर्यसमाज की पंजिका में प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों की नियुक्ति तिथि से पूर्व दो वर्ष से अंकित रहे हों और यदि वे शुल्क देने वाले सभासद् हों तो उन्होंने पूरे दो वर्षों का शुल्क आर्यसमाज के उपनियम संख्या-4 के अनुसार दिया हो) **पर एक प्रतिनिधि भेज सकेगा**। प्रतिनिधि फार्म के साथ 2 नवीनतम फोटो पासपोर्ट साइज के साथ भेजें, जिसके पीछे प्रतिनिधि का नाम व विवरण लिखा हुआ होना चाहिये। प्रत्येक प्रतिनिधि का पहचान-पत्र भी जारी किया जाएगा।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा द्वारा दिनांक 20.5.12 को पारित प्रस्ताव संख्या-14 के अनुसार जिन आर्यसमाजों ने सभा के गत वर्षों के दो निर्वाचनों में या उससे अधिक में अपना नियमानुसार देयशुल्क (वेदप्रचार, दशांश व पत्रिका शुल्क) सभा को प्रदान नहीं किया वे आर्यसमाजें चुनाव प्रक्रिया में भाग न लें सकेंगी। (सोसायटी एक्ट-2012 की धारा-15 के अनुसार)।
3. नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ 'आर्य प्रतिनिध' पत्रिका का शुल्क 150 रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष 2010-2011, 2011-2012, 2012-2013 का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।
4. आर्य सभासद् वे होते हैं जिनका नाम किसी आर्यसमाज की पुस्तक पर सदाचारपूर्वक दो वर्ष से अंकित रहा हो, शतांश के अनुसार सभासदों की आय के हिसाब से समाज को शुल्क देते रहे हों और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम 25 प्रतिशत हो। (यदि अन्तरंग सभा में किसी कारण से उनका शुल्क माफ न कर दिया गया हो या उपस्थिति के नियम को शिथिल न कर दिया हो)। अनिश्चय की स्थिति में सभा का निश्चय यह है—

वेदप्रचार	दशांश	आर्य प्रतिनिधि (साप्ताहिक पत्रिका)
1000/-	आय का शतांश या न्यूनतम	150/-

1. सभी सभासदों से उनकी आय का शतांश प्राप्त करें अथवा जो सभासद् नौकरी (प्रथम श्रेणी) अधिक आय वाले, डॉक्टर, वकील, उद्योगपति, इंजीनियर आदि से आर्यसमाज के नियम-उपनियम के अनुसार उनकी आय का शतांश अथवा 1000/- रुपये वार्षिक शुल्क लें।
2. जो सभासद् नौकरी क्लास-II व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले, बड़े दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 20/- रुपये मासिक शुल्क लें।
3. जो सभासद् नौकरी क्लास-III व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले पत्रकार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 15/- रुपये मासिक शुल्क लें।
4. जो सभासद् पैंशनर, नौकरी क्लास-IV व समकक्ष आय वर्ग वाले, छोटे दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 10/- रुपये मासिक शुल्क लें।
5. जो सभासद् छात्र, बेरोजगार, गृहिणी, मिस्त्री, मजदूर, कृषक, समाजसेवी, आश्रित आदि से न्यूनतम 5/- रुपये मासिक शुल्क लें।
6. **स्थानीय आर्यसमाज द्वारा चुने जाने वाले प्रतिनिधि नए सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क वार्षिक के स्थान पर तीन वर्ष का वार्षिक प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क सभा को अग्रिम भेजें।**

5. **चुने जाने वाले प्रतिनिधि की आयु 21 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए** और प्रतिनिधि-फार्म पर छपे प्रतिज्ञा-पत्र पर प्रतिनिधि के हस्ताक्षर एवं उसका पूरा पता एवं **फोन नंबर** फार्म में लिखना जरूरी है।
6. प्रतिनिधियों का निर्वाचन अन्तरंग सभा में आर्य सभासद् सर्वसम्मति से या बहुमतानुसार करेंगे परन्तु वह प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किया जाएगा जो किसी ऐसे आर्यसमाज का सभासद् हो जिसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ न हो अथवा जिसने सभा के विरुद्ध कोई वाद उत्पन्न किया हो या अनुशासनहीनता की हो।
7. नया प्रतिनिधि फार्म भेजते समय और प्रतिनिधियों के प्रत्येक चुनाव के अवसर पर जो सभा को प्रार्थना पत्र भेजा जाए उसके साथ आर्यसभासद् होने का निश्चय-पत्र, शुल्क देने और सदाचार व विश्वास रखने का प्रतिज्ञा-पत्र संलग्न होना आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिवेशन में कोई प्रतिनिधि तब तक सम्मिलित न हो सकेगा जब तक उसका निश्चय-पत्र और प्रतिज्ञा-पत्र नियमानुसार सभा के पास न पहुंच चुका हो, जिस समाज का वह प्रतिनिधि हो उससे वेदप्रचार, दशांश तथा 'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका शुल्क की राशि प्राप्त न हो चुकी हो।
8. प्रत्येक आर्यसमाज अपने सदस्यों के शुल्क की आय का दशांश प्रतिवर्ष सभा के कोश में भेजेगा (सभा के विधान की धारा 9 नियम एवं नियमावली)।
9. भरे हुए प्रतिनिधि फार्म की एक नकल अपने आर्यसमाज के रिकार्ड के लिए अवश्य रखनी चाहिए। आवश्यकतानुसार खाली प्रतिनिधि फार्म की फोटो कापी करा लें।
10. वही फार्म स्वीकार किये जायेंगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेंगे।
11. **प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय से कार्य दिवसों में कभी भी प्राप्त किये जा सकते हैं।**

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें। धन्यवाद।

—सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है, इसलिए सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपना तीन वर्षीय (2010-2011, 2011-2012, 2012-2013) रिकार्ड जैसे कि सभासदों का सदस्यता रजिस्टर, वार्षिक शुल्क रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर आदि विवरण तैयार रखें।

सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह कुण्डू, श्री सत्यव्रत शास्त्री जून 2013 मास से आर्यसमाजों का रिकार्ड निरीक्षण करने हेतु दौरा कर रहे हैं। जो आर्यसमाजें अपने रिकार्ड का निरीक्षण नहीं करवायेंगी तथा जिनका रिकार्ड ठीक करने की हिदायत देने पर भी ठीक नहीं किया जायेगा उन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म स्वीकार नहीं किये जायेंगे। कृपया अपनी आर्यसमाज का रिकार्ड शीघ्र तैयार करके सभा के उपरोक्त अधिकारियों से निरीक्षण अवश्य करवा लें।

—आचार्य विजयपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

www.thearyasamaj.org

दयानन्द तो बस दयानन्द ही थे

❑ कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा 0172–4010679

गतांक से आगे....

सन् 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया–मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्यसमाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

भोजन **कैसे भ्रष्ट होता है**– फर्रुखाबाद में एक दिन एक साधु स्वामी जी के लिए कढ़ी और चावल बनाकर लाया और उन्होंने उसे खा लिया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधु के घर का भोजन खा लिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है–एक तो यदि किसी को दुःख देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीद कर भोजन बनाया जाए, दूसरे भोजन मलिन हो या उसमें कोई मलिन वस्तु गिर जाए। साधु लोगों का मेहनत का पैसा है, उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।

देश की भाषा हिन्दी–महर्षि दयानन्द देश की एकता के लिए आवश्यक समझते थे कि सारे देश की भाषा एक हिन्दी हो। इसलिए वे अपने ग्रन्थों का किसी दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद न करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी देशवासी उनके ग्रन्थों को हिन्दी में ही पढ़ें। वे मानते थे कि भारतवासियों को हिन्दी भाषा सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है। उनके ग्रन्थों का अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद के वे विरोधी न थे। सन् 1870 में मिर्जापुर में स्वामी जी ने एक बंगाली बनवारीलाल को अंग्रेजी सीखने के लिए और मैक्समूलर कृत वेदों का अंग्रेजी अनुवाद सुनने के लिए नौकर रखा था।

सन् 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

सन् 1881 में रायपुर में ठाकुर हरिसिंह स्वामी जी से मिलने आए। स्वामी जी ने ठाकुर साहब से पूछा कि आपके यहां राजमन्त्री कौन है तो उन्होंने उत्तर दिया कि शेख इलाही बख्श हैं, परन्तु वे जोधपुर गए हैं। उनके पीछे उनके भतीजे करीम बख्श (जो वहां उपस्थित थे) सब काम देखते हैं। यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि आर्य पुरुषों को उचित है कि मुसलमानों को अपना राजमन्त्री न बनाएं, ये दासी पुत्र हैं। यह सुनकर करीम बख्श और अन्य 5–7 मुसलमान, जो वहां बैठे थे, क्रोध में भर गए।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं "मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।" महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं–**बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।** अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं – **यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः।** अर्थात जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। "भ्रन्ति निवारण" पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं–"मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।"

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में– 23 नवम्बर 1880 को थियोसोफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्यचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। "मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान् और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।"

पण्डित महेन्द्रपाल आर्य (पूर्व नाम मौलवी महबूब अली) जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में एक बड़ी मस्ज़िद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे आर्यसमाज में आ गये। वे कहते हैं "मैं अज्ञानियों के टोले से निकल कर ज्ञानियों के टोले में आया हूँ। मुसलिम समाज अनपढ़ व अन्ध–विश्वासियों का समाज है। आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। बाकी जिन्दगी मैं पढ़े लिखे अन्धविश्वासमुक्त नेक लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ।"

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देषभक्त लाला हरदयाल एम. ए. के विचार –"इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।"

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी–"हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मनुष्य की परिभाषा में लिखते हैं –"मनुष्य उसी को कहना कि विचारशील होकर अपनी तरह दूसरों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपनी पूरी ताकत से अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सब प्रकार से किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही बड़ा दुःख झेलना पड़े, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।" महाराजा भर्तृहरि जी का एक श्लोक है –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्, अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

अर्थात नीति को जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन आए या जाए, मृत्यु अभी आ जाए या चिरकाल के बाद आए, परन्तु धैर्यवान लोगों के पग न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते।

यह श्लोक महर्षि दयानन्द के जीवन पर पूरी तरह घटित होता है। सभी प्रकार के बिघ्न–बाधाओं, खतरों और प्रलोभनों से टक्कर लेते हुए स्वामी जी सत्य और न्याय के प्रचार पर डटे रहे।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था–हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

शेष पृष्ठ 6 पर....

भजन

सूबे० करतारसिंह आर्य सभा-कोषाध्यक्ष

अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया।
यह संसार कैसा है, अद्‌भुत बनाया॥
कोई दूध, माखन, मलाई उड़ाये।
कोई पेट खाली करे हाय-हाय॥
किसी ने पिये आँसू और गम है खाया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥
कोई आसमां पर चढ़ा जा रहा है।
कोई बोझ सिर पर लिये जा रहा है॥
किसी ने किराये का रिक्शा चलाया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥
कोई कांटों पर भी पड़ा मुस्कुराता।
कोई सेज पर भी दु:खी नजर आता॥
किसी को हँसाया किसी को रुलाया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥
कोई लखपति है मगर गोद खाली।
कोई भूखा है ग्यारह बच्चों का वाली॥
नहीं पूछता कोई अपना पराया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥
कोई दूध कुत्तों को अपने पिलाता।
कोई बच्चों में बैठा आँसू बहाता॥
न दो दिन से परिवार ने अन्न खाया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥
तेरा न्याय मेरे प्रभु जी अटल है।
सभी कोयहाँ मिलता कर्मों का फल है॥
है वेदों ने हमको यही तो बताया।
अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्य दैनन्दिनी-2014 (डायरी)

आप सबको पता है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर प्रकाशित करता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके।

आप सभी से निवेदन है कि अपने नाम-पते 01/9/2013 तक भेजने की कृपा करें। ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके। निम्न पते पर भेजें।

संजीव आर्य (प्रबन्धक)
आर्य प्रकाशन, 814, कुण्डेवालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-6, मो० 09868244958

दयानन्द तो बस दयानन्द ही थे.... पृष्ठ 5 का शेष....

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाए अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजें सभा की भजनमण्डलियों का लाभ उठावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक सभा की भजनमण्डलियों के माध्यम से वेदप्रचार और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का कार्य उत्तम ढंग से किया जा सकता है। विशेष तौर पर हरयाणा की आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों और वेदप्रचार सप्ताह में इसका बहुत अच्छे ढंग से लाभ उठा सकती हैं। सभा में निम्नलिखित भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं—

क्रम	नाम		मोबाइल नं०
1.	श्री सहदेव सरस भजनोपदेशक	—	09582142371
2.	श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक	—	9354824574
3.	श्री रामकुमार आर्य भजनोपदेशक	—	8053269231
4.	श्री महेन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9416344174
5.	श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9991273589
6.	श्री चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक	—	9812380029
7.	श्री रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक	—	9416955090
8.	श्री स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक	—	.....

आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार सप्ताह तथा विशेष अवसर पर आयोजित समारोह में अवश्य आमन्त्रित करके वेदप्रचार को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें। —सत्यवीर शास्त्री, सभामंत्री

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आव्हान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच
हवन सामग्री
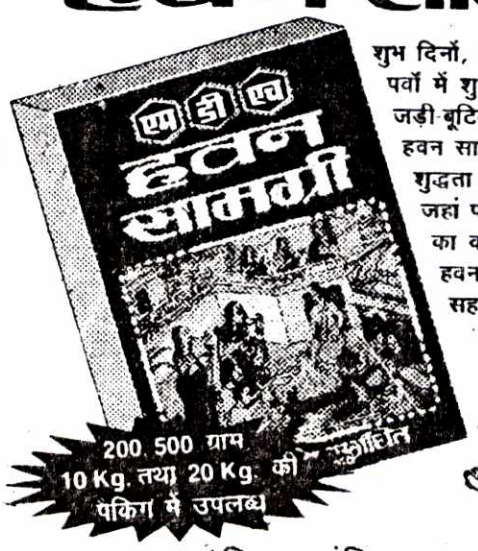

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां
एम डी एच रूह अगरबत्ती
एम डी एच मुस्कान अगरबत्ती
एम डी एच चन्दन अगरबत्ती
एम डी एच पराग अगरबत्ती
एम डी एच नवयुग अगरबत्ती
महाशियां दी हट्टी लि०
एच डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्‌प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

www.thearyasamaj.org

आर्य-संसार

चौ० देवीसिंह की प्रतिमा का अनावरण तथा यज्ञशाला का उद्घाटन

दिनांक 10.11.2013 को स्वर्गीय चौ० देवीसिंह नांदल (बोहर) की प्रतिमा का अनावरण जाट स्कूल के प्रांगण में माननीय मुख्यमन्त्री हरियाणा श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा किया गया तथा पास बनी नई यज्ञशाला का उद्घाटन भी हुआ जिसमें पहली बार यज्ञ का आयोजन यिका गया जिसके ब्रह्मा डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार तथा सहयोगी आर्यसमाज तिलकनगर रोहतक के सदस्य एवं शास्त्री सहस्रपाल, महावीर शास्त्री, श्री महेन्द्रसिंह धनखड़, सुखवीरसिंह दहिया, रणवीरसिंह मान तथा भलेराम आर्य थे। इसमें यजमान के रूप में श्री अशोक कुमार पुत्र श्री जयसिंह पुत्र श्री देवीसिंह नांदल व नरोत्तम सिंह पुत्र श्री रणधीरसिंह पुत्र श्री देवीसिंह नांदल बने तथा श्री चंचलसिंह नान्दल प्रपौत्र श्री देवीसिंह ने प्रबन्धक के रूप में कार्य किया। इस अवसर पर डॉ० जगदेवसिंह जी ने पंचमहायज्ञ के बारे में विस्तार से व्याख्यान देकर यज्ञ की महिमा बताई तथा श्री जगवीर सिंह नान्दल सेवानिवृत डीईओ ने आर्यसमाजी स्वर्गीय देवी सिंह के कार्य तथा जीवन के बारे में बताया और चौ० चतरसिंह हुड्डा चेयरमैन ने भी अपने अनुभव बताये। श्री अशोक कुमार, नरोत्तम तथा चंचल सिंह एडवोकेट ने प्रीतिभोज का भी सभी आगन्तुकों के लिए अच्छा प्रबन्ध किया हुआ था। उन्होंने आश्वासन दिलाया कि यज्ञशाला में नियमित यज्ञ का प्रबन्ध भी किया जा रहा है जिससे उनके दादाजी (जो एक सच्चे आर्यसमाजी तथा समाजसेवक थे) के कार्य को आगे बढ़ाया जा सके।

इस अवसर पर श्री आनन्दसिंह दांगी, विधायक भारतभूषण बत्रा, विधायिका श्रीमती शकुन्तला, श्री सुरेन्द्रसिंह नांदल प्रधान जाट संस्था तथा संस्था के अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

—सुखवीरसिंह दहिया, आर्यसमाज तिलकनगर, रोहतक

वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी (हरयाणा) का 71वां वार्षिक उत्सव दिनांक 21 व 22 सितम्बर 2013 (शनिवार व रविवार) को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी, आर्य प्रवक्तागण व भजनोपदेशक आमन्त्रित हैं।

अत: सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में परिवार सहित पधारकर वेदामृत पान कर जीवन को सफल बनायें।

—धर्मवीर आर्य, मंत्री

शोक-समाचार

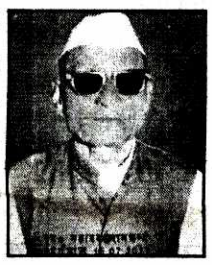

(1) महाशय मामचन्द जी का गत दो महीने से बीमार होने के कारण 15.7.2013 को स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु नब्बे वर्ष की थी, वे राजपुर ग्राम जिला गौतमबुद्धनगर नोएडा के रहने वाले थे। उनकी आयु जब अठारह साल की थी तब चेचक की बीमारी में उनकी दोनों आंखें चली गई थी। पं० शिवलाल जी ने उन्होंने गानविद्या सीख कर लम्बे समय तक आर्यसमाज का प्रचार किया। उनकी स्मरणशक्ति बड़ी तीव्र थी। एक-दो बार के बताने से भजन-इतिहास याद हो जाते थे। उनकी आवाज बिना माइक के भी कोसों तक जाती थी उनके जाने से आर्यसमाज के उपदेश में कमी आई है भगवान् उनको सद्गति प्रदान करे।

—महात्मा देवानन्द सभा भजनोपदेशक

(2) स्वामी धर्मानन्द (पूर्व नाम श्री दलीपसिंह सुपुत्र श्री मुरलीराम) गाँव जसराणा जिला सोनीपत (हरयाणा) का स्वर्गवास दिनांक 12.8.2013 (सोमवार) को शाम 4.30 बजे हुआ। इनकी स्मृति में शान्तियज्ञ दिनांक 18.8.2013 को उनके सुपुत्र श्री जगदीश मलिक के निवासस्थान म०नं० 1459/5, बालकनाथ कालोनी, जीन्द रोड रोहतक पर आचार्य वेदमित्र द्वारा सम्पन्न किया गया।

—रामचन्द्र आर्य, ग्राम जसराणा

प्रजापति का अपनी प्रजाओं के प्रति.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

आचरण का जो दुष्परिणाम हमारे सामने है उसका सही और सटीक वर्णन कवि की ये पंक्तियां कर रही हैं—

हृदय-हृदय के बीच खाइयाँ, लहू बिछा मैदानों में।
घूम रहे हैं युद्ध सड़क पे, शान्ति छुपी श्मशानों में॥
जंजीरें कट गईं मगर, आजाद नहीं इन्सान अभी।
दुनियाभर की खुशी कैद है, चाँदी जड़े मकानों में॥

देवों के अमर्यादित आचरण, मनुष्यों की कृपणतापूर्ण परिग्रह वृत्ति एवं असुरों की अतिशय क्रूरता को देखकर कवि आने वाले 'कल' के डरावने रूप की कल्पना करके सिहर उठता है और कहता है—

मैं सोच रहा हूँ अगर तीसरा युद्ध छिड़ा,
इस नई सुबह की नई फसल का क्या होगा?
मैं सोच रहा हूँ गर धरती से उगा खून,
मासूम हलों की चहल-पहल का क्या होगा?

इस सम्भावित त्रासदी को टालने का यदि कोई उपाय है तो मात्र और मात्र वैदिक विचारधारा के पास है, ऋषियों के चिंतन और आर्ष दर्शन के पास है, जिसका एक सुखद उदाहरण प्रजापति का अपनी प्रजाओं के प्रति प्रस्तुत द-द-द उपदेश है जो गरजती मेघमालाओं की गर्जना में सतत गूञ्ज रहा है, जल धाराओं के कल-कल निनाद में जिसकी अनुगूञ्ज है, तीव्र झंझावात, तूफानी हवाओं, प्रकृति की हलचल में जो सदा सर्वत्र विद्यमान है—द-द-द। आइये, इस उपदेश को समझें, अपने वर्तमान को सुधारें, सुखी और सुरक्षित भविष्य का पथ प्रशस्त करें। फिर देखें क्या तात्पर्य है—द-द-द से—

प्रजापति बोले देवों से 'द' पथ का अनुगमन करो।
देवत्व बनाये रखने को, दुष्प्रवृत्तियों का दमन करो॥
मनुष्यों से भी यही कहा कि तुम भी 'द' को अपनाओ।
दान करो और सुखी रहो, अन्यों को सुख पहुँचाओ॥
असुरों के लिए भी प्रजापति ने, फिर दोहराया वही दकार।
दया करो, दया करो, दयध्वम् से सम्भव उद्धार॥
द-द-द=दाम्यत, दत्त, दयध्वम्=देव, मनुष्य, असुर।

सम्पर्क—जवाहरनगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा)
मो० 09416294347, फोन 01681-226147

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

—वानप्रस्थी अत्तरसिंह स्नेही, सभा पुस्तकाध्यक्ष

विद्वानों से विरोध न करें

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

विद्वानों को देवता कहा गया है। देवताओं की पूजा करनी चाहिए न कि उनका अपमान। ऋषि दयानन्द ने **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** में स्पष्ट किया है कि विद्वानों की निन्दा व अपमान नहीं करना चाहिए। विद्वान् जहाँ रहते हैं उस स्थान को दैवत कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि इन स्थानों पर उपद्रव न करें। ऋषि दयानन्द के विरोध रखने के कारण राव कर्णसिंह विक्षिप्त हो गया, कहते हैं कि शराब व मांस का भी सेवन करने लग गया। जिस पर परमात्मा की कृपा होती है वह दूर-दूर तक भी विद्वानों के पास विद्या के लिए जाता है, तभी उसका स्तर बढ़ता है व अभिमान मुक्त होता है, इसके अभाव में तो वह अभिमान को ही स्वाभिमान समझ बैठता है। भर्तृहरि ने तो कहा है, वह जब तक विद्वानों से नहीं मिला तब तक उसका अभिमान बढ़ा हुआ था, जब वह विद्वानों से मिला तो उसका अभिमान ज्वर की भांति उतर गया। जिनका यह ज्वर नहीं उतरता उन्हें चिंतन करना चाहिए कि वे किस श्रेणी में हैं। विद्या से विनम्रता व शील स्वभाव की प्राप्ति होती है, जिसमें ये लक्षण हों, उसी ने विद्या के फल को प्राप्त किया है। आर्यसमाज के विशिष्ट विद्वानों, बलिदानियों के जीवन व विचारों का अध्ययन करना चाहिए, जिससे कि आर्यसमाज का कार्य करने की शैली का पता चले।

आचार्य अभय आर्य

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **88वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 8 सितम्बर 2013, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : **आचार्य देवव्रत**, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

कार्यक्रम-8 सितम्बर 2013 प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक

यज्ञ, भजन, प्रवचन

निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

उत्तराखण्ड बाढ़पीड़ितों के लिए सहायता की अपील

उत्तराखण्ड में बारीश, बाढ़ और भूस्खलन से आई भीषण आपदा ने विनाश जैसे हालात पैदा कर दिये हैं। तबाही के मंजर रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। सैकड़ों लोग मारे गये हैं, सैकड़ों लापता हैं और हजारों-हजार को मदद की आवश्यकता है। यह समय राष्ट्रधर्म निभाने, पीड़ितों के साथ खड़े होने और उन्हें यह भरोसा दिलाने का है कि हम सब उनके साथ हैं। हम सब मिलकर उत्तराखण्ड के विपदाग्रस्त और असहाय लोगों के जीवन को संबल प्रदान कर सकें, इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने 'उत्तराखण्ड बाढ़पीडितों की सहायतार्थ कोष' बनाया है तथा पर्याप्तों का सहयोग मिल रहा है।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय में नकद या बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के नाम से राशि भेज सकते हैं। दानदाताओं के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किये जावेंगे।

आचार्य बलदेव आचार्य विजयपाल सत्यवीर शास्त्री सूबे. करतारसिंह

संरक्षक प्रधान मंत्री कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

मेरी उत्तराखण्ड की यात्रा.... पृष्ठ 2 का शेष....

परिवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की एक पर्ची दी गई और उन्हें कहा गया कि वह देवांगण आकर एक सोलर लैम्प तथा अन्य सहायता प्राप्त कर लें। दोपहर का भोजन भी मंगलराम के निवास स्थान पर एवं पर्ची वितरण का कार्य भी वहीं हुआ। उन आपदा से ग्रस्त परिवारों को सायं 3 बजे से 5 बजे तक का समय दिया गया। हम वहां लगभग 3 बजे पहुंचे तो यह माधव जी, श्री मंगलराम जी, श्री शिवलाल आर्य ने पहले से ही लोगों को कर रखा था हम सब भी सुभाष गुगलानी, पंक्तिबद्ध श्री मुकेश आर्य, श्री पदमचन्द आर्य सहित उनको वितरण में सहयोग कर रहे थे। प्रत्येक परिवार को एक सोलर लैम्प तो दिया ही गया इसके अतिरिक्त खाद्यसामग्री, चावल, आटा, दाल, शालें, महिलाओं के लिए सूट, पुरुषों के लिए कमीजें भी प्रदान कीं। यह क्षेत्र रुद्रप्रयाग जनपद के उखीमठ विकास खण्ड का एक भाग है।

अभी भी जो ल्वारा ग्राम के पास मार्ग अवरुद्ध हुआ था खुला नहीं था। हम बार-बार वहां के अधिकारियों SDM एवं DM से संपर्क करते रहे। परन्तु प्रशासन का कोई भी अधिकारी वहां उपस्थित नहीं मिला। वह सारा क्षेत्र सरकार विहीन है, प्रभु के सहारे सब कार्य चल रहा है। वहां के कुछ प्रबुद्ध लोगों ने यह बताया कि उस 1.5 मास के अन्दर मुख्यमन्त्री केवल 15 मिनट के लिए आया और वह भी गुप्तकाशी में बैठकर अधिकारियों के साथ चाय पीकर चला गया। वहां बाढ़ से प्रभावित लोग इस समय पूरी तरह आक्रोश में हैं। उनका कहना है कि आप जैसे लोग आकर हमारी सहायता न करते तो हमें बहुत अधिक कठिनाई होती। वहां प्रशासन नाम की कोई चीज है ही नहीं। सब कुछ प्रभु के सहारे चल रहा है। कितने ही NGO वहां अपना सामान लाये। परन्तु उचित व्यवस्था के न होने के कारण वह लुट गए। परन्तु आर्यसमाज के अधिकारियों की सुन्दर व्यवस्था के कारण वितरण उचित रूप से एवं जरूरतमंद व्यक्तियों तक पहुंची। वहां पर विद्यालय गुरुकुल एवं नगर बसाने की योजना पर विचार-विमर्श हुआ। सरकार हमें जमीनें नि:शुल्क नहीं देगी। ऐसा विचार लोगों ने हमें बताया परन्तु श्री माधवं जी ने हमें विश्वास दिलाया कि वह हमें कम से कम कीमत पर धरती उपलब्ध करायेंगे। अन्तत: हम 4.8.2013 प्रात: 6 बजे आन्द्रावाड़ी से चल पड़े। कई जगह दो घंटे तक Land Sliding रही है, कीचड़ भरा मार्ग मिला और हम 15 घण्टे यात्रा करके हमें चम्बा किसी होटल पर रात्रि व्यतीत करनी पड़ी। 5.8.2013 को प्रात: 7 बजे चम्बा से चलकर लगभग 11 बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार पहुंचे।

वहां स्नान, जलपान कर हम दिल्ली गुड़गांव के लिए प्रस्थान किया। इस सारी हरिद्वार से लेकर गुप्त काशी की यात्रा अपने गाड़ी चालक राजू जी को धन्यवाद न करें तो हमारी कृतघ्नता होगी। बहुत ही सहनशील एवं सतर्क चालक सिद्ध हुए। इस पूरी यात्रा में परमपिता परमात्मा ने हमारे पवित्र मिशन के लिए भरपूर सहयोग दिया। पल-पल मृत्यु सामने दिखती थी परन्तु परमपिता परमात्मा जानता था कि हमारा यह कार्य स्वार्थविहीन एवं परोपकार पूर्ण है। अत: किसी भी साथी को कोई परेशानी नहीं हुए इसके लिए हम उस महान् शक्ति को शत-शत नमन करते हैं। मैं अपने साथियों श्री सुभाष गुगलानी, श्री मुकेश आर्य, श्री बिजेन्द्र आर्य, श्री रणधीर आर्य का हृदय से आभारी हूँ। श्री विनय आर्य जी का मार्गदर्शन एवं उत्साह न मिलता तो यह मिशन अधूरा ही रहता। अत: मैं भी विनय आर्य जी को उनकी कर्मठता एवं शालीनता के लिए साधुवाद देता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आर्यसमाज को ऐसे कुछ और नवयुवक प्रदान करे। हमें ऐसे नवयुवकों पर नाज है।

6.8.2013 को प्रात: श्री माधवजी से बात की गई उन्होंने बताया कि श्री बिजेन्द्र आर्य जी एवं श्री रणधीर आर्य जी को दो-तीन स्थान दिखाये गये जहाँ पर हमने किसी आर्यनगर गुरुकुल अथवा विद्यालय की स्थापना करने का विचार बनाया हुआ है। इसकी चर्चा वह लोग आपसे दिल्ली पहुंचकर करेंगे। यह एक शुभ संकेत है आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने इस पवित्र कार्य के लिए 15 लाख रुपये की राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को देने का निर्णय कर लिया गया है। प्रभु कृपा करे कि हम इस कार्य में सफल हों।

संपर्क सूत्र—04/45, शिवाजीनगर,
गुड़गांव, मो० 09911197073

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।